# श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ

द्विवर्षीय विशारद (प्रथम खण्ड)

टेस्ट पेपर 2008-2009

**समय : 1.5 घण्टे** **छहढाला** **पूर्णांक : 50**

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए। (कोई तीन) (9)

   (1) वीतराग (2) अगृहीत मिथ्यात्व

   (3) धर्मद्रव्य (4) अकामनिर्जरा

2. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए। (कोई दो) (8)

   (1) अगृहीत मिथ्यात्व व गृहीत मिथ्यात्व

   (2) अंतरात्मा व परमात्मा

   (3) निश्चय सम्यग्दर्शन व व्यवहार सम्यग्दर्शन

3. निम्नलिखित प्रश्नों में किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें। (20)

   (1) तिर्यञ्च गति के दुःखों का वर्णन कीजिये?

   (2) जीव व अजीव तत्त्व संबंधी भूल स्पष्ट करें?

   (3) सम्यग्दर्शन के पच्चीस दोषों के नाम लिखिए?

   (4) कुदेव, कुगुरु एवं कुधर्म का सामान्य स्वरूप लिखें?

   (5) मनुष्यगति का वर्णन ग्रन्थानुसार करें?

4. सात तत्त्व संबंधी भूलों को स्पष्ट करते हुए उससे संबंधित छंद भी लिखें? (6)

5. मोक्षमार्ग दो नहीं मोक्षमार्ग का कथन दो प्रकार से हैं स्पष्ट करें। (7)

नाम: सौमिल मेहता
Philadelphia, USA

छहढाला

ता. २/१४/०९

प्र-१

(३) धर्मद्रव्य :-

अपनी क्रियावती शक्ति के कारण चलते हुए जीव और पुद्गलों को चलने में सहायक होने का आरोप जिस पर आये उसे धर्म द्रव्य कहते हैं। जैसे चलती हुई मछली को पानी सहायक होता है।

(४) अकाम निर्जरा :-

अपनी इच्छा बिना निज क्षुधा-तृषा आदि अवस्थाओं को मंदकषाय रूप अवस्थाएं भोगना, अर्थात निज संयोगों में न जुड़ कर मंदकषाय रूप प्रवर्तना; इसे अकामनिर्जरा कहते हैं। मंदकषाय का कारण होने से यह पुण्य बंध का कारण है जो स्वर्गादि सुख दे देता है।

(२) अगृहीत मिथ्यात्व :-

जीवने सात तत्त्व तथा छह द्रव्य के संबंधमें अनादि से जो उलटी मान्यता पाल रखी है उसे अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

(१) वीतराग :-

आत्मा अपने त्रिकाल शुद्ध ज्ञानानंद स्वरूपको जानकर, उसको ही अपना स्वरूप मानकर उसमें संपूर्ण लीन हो जाये तभी सभी राग-द्वेष-मोह आदि विकारी भावों तथा उनके निमित्त मोह कषायका नाश होते ही आत्माकी शुद्ध अवस्था प्रगट होती है उसे वीतरागी दशा कहते हैं।

TOPS FORM 7525
Litho in U.S.A.

प्र.2

| २ अंतरात्मा | परमात्मा |
|---|---|
| (१) पर द्रव्य और रागादि विकारी भावों से अपना नाता तोड़कर अपने त्रिकाली आत्मतत्त्व को अपनत्व स्वरूप जानकर उसे ही अपना मानना तथा उसमें लीन रहने का प्रयास करने रूप साधक दशा को अंतरात्मा कहते हैं। | (१) आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में संपूर्ण तथा लीन रहे तथा सर्व विकारी भावों से छूटकर संपूर्ण शुद्ध दशा तथा आठों कर्म तथा शरीर रहित शुद्ध आत्म ~~[illegible]~~ दशा या शरीर सहित ~~आठ~~ चार घातिकर्म रहित अरिहंत दशा परमात्मा दशा है। |
| (२) यह साधक दशा है। | (२) यह पूर्ण शुद्ध दशा है। |
| (३) इन्हें अपूर्ण ज्ञान तथा सुख है। | (३) इन्हें केवलज्ञान तथा पूर्ण सुख है। |
| (४) इन्हें भूमिकानुसार स्वरूपाचरण, देश, सकल या यथाख्यात चारित्र है। | (४) इन्हें संपूर्ण चारित्र यथाख्यात चारित्र प्रगट हुआ है। |
| (५) यह गृहस्थ या मुनिराज होते हैं। | (५) यह अरिहंत या सिद्ध होते हैं। |
| (६) | |

| ⑧ अगृहीत मिथ्यात्व | गृहीत मिथ्यात्व |
| --- | --- |
| ① जीवने अनादिसे सात तत्त्व तथा ~~देव~~- देव-गुरु-धर्म के स्वरूपों को गलत मान्यता पालके रखी है वह अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं। | ① जीवने देव-गुरु-शास्त्र के संदर्भमें इस भवमें नया धारण किया हुआ मिथ्यात्व गृहीत मिथ्यात्व है। |
| ② यह अनादि से एक पल के लिए भी नहीं छूटा है। | ② यह अनंत बार छूटा और अनंत बार नया ग्रहण किया है। |
| ~~③ यह सिर्फ मनुष्य पर्यायों होता है~~ | |
| ③ यह सब गतियों में होता है। | ③ यह सिर्फ मनुष्य पर्यायों में होता है। |
| ④ यह गृहीत छूटने के बाद ही छूटता है। | ④ यह छूटने बाद अगृहीत छूटने का कोई नियम नहीं है। |
| ⑤ ~~[illegible]~~ इसके फलमें अन्ततः निगोद दशा प्राप्त होती है। | ⑤ इसके फलमें ऐसा कोई नियम नहीं है। ~~[illegible]~~ |

⑥

प्र-३

५ **मनुष्य गति के दुःख का वर्णन:-**

जननि उदर वस्यो नव मास, अंग संकुचतें पायी त्रास,
निकसत जे दुःख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर।

बाल पनेमें ज्ञान न लह्यो, तरुण समय तरुणीरत रह्यो,
अर्धमृतक सम बूढापनो, ~~कैसे~~ कैसे रुप लखे अपनो।

यह जीव मनुष्य गतिमें आते ही माता के पेटमें नव मास तक अंग संकुचके रहता है। यह बंधन ऐसा होता है के हीलने तक का अवसर नहिं मिलता। तदुपरांत वह औंधे मुह रहता है। ऐसी अवस्थामें घोर दुःख सहन करता है। पेटसे नीकलते समय जैसे जंत्रीमें तार नीकले वैसे अत्यंत कष्ट सहन करता हुआ बहार आता है।

बालपनमें जन्म के दुःख भूल जाता है। तथा ज्ञान न होने से कारण खेल कूदमें बालपन निकाल जाता है।

तरुण वयमें यह जीव स्त्री के संयोगमें अपना काल विषय भोगमें गमा देता है।

बुढापनेमें शरीर शिथिल होने लगता है और अंग काम करना बंध कर देते है। अर्द्ध मृतक दशा हो जाती है। ऐसी दशामें अपना रुप का वर्णन करने की भी शक्ति नहिं रहती तो धर्म ध्यान कैसे करे? इस तरह पूरा मनुष्य जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर देता है। मनुष्य भव चिंतामणी रत्न

प्राप्त करने समान दुर्लभ है लेकिन वह व्यर्थ ही निष्फल जाता है। और जीव कुगतियों चला जाता है।

(४) <u>तिर्यंच गति के दुःख:-</u>

① निगोद :-

एक श्वास में १८ बार जन्म-मरण करके यह जीव अनंत दुःख भोगता है। ज्ञान की इतनी कम शक्ति होती है कि अपना हित करने का कोई मौका ही नहीं मिलता।

② स्थावर :-

निगोद में अनंत काल व्यतीत करने के बाद ~~कुछ स्थावर में~~ ~~[illegible]~~ जीव हरित, वायु, अग्नि, भूमि तथा जल रूप स्थावर पर्यायों में बहुत दुःख सहन करता है।

③ विकलत्रय :-

चिंतामणी रत्न प्राप्त करने समान दुर्लभ है स्थावर से विकलत्रय पर्याय प्राप्त करना। लट, चिटी, भवरा आदि अवस्था धारण करके जीव अनंत दुःख सहन करता है जो कि इन्द्रियगम्य है।

④ असंज्ञी पंचेन्द्रिय :-

मन नहीं होने के कारण हित अहित का विवेक न होने से बहुत दुःख सहन करता है।

⑤ संज्ञी पंचेन्द्रिय :-

मन होने पर भी या तो स्वयं क्रूर होने से अत्यंत

क्रोधी ~~संक्लेश~~ परिणाम सहित निर्बल पशु को मार कर खाता है, या तो स्वयं निर्बल होने के कारण बलवान पशु से खाया जाता है। वध, बंधन, छेदन, भेदन, भूख, प्यास आदि अनंत दु:ख सहन करते हुए संक्लेश परिणामों से मरता है और दुर्गति में चला जाता है। आत्मा का हित करने का अवसर सिर्फ संज्ञी पंचेन्द्रियपने मिला था वह भी खो देता है।

3 सम्यग्दर्शन के पचीस दोष:-

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट अनायतन त्यागो,
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो।

सम्यक्त्व के पचीस दोष

- आठ मद
  - कुल मद
  - जाति मद
  - रूप मद
  - ज्ञान मद
  - धन मद
  - बल मद
  - तप मद
  - प्रभुत्व मद
- शंकादिक आठ दोष
  - शंका
  - कांक्षा
  - विचिकित्सा
  - तत्त्व मूढ़ दृष्टि
  - अपने गुण तथा पर के दोष प्रगट करना
  - वात्सल्य न रखना
  - अस्थितिकरण
  - अप्रभावना (प्रभावना न करना, कुप्रभावना)
- छह अनायतन
  - कुदेव
  - कुगुरु
  - कुधर्म
  - कुदेव सेवक
  - कुगुरु सेवक
  - कुधर्म सेवक
  - (इनकी प्रशंसा या अनुमोदना)
- तीन मूढ़ता
  - देव मूढ़ता
  - धर्म (लोक) मूढ़ता
  - गुरु मूढ़ता

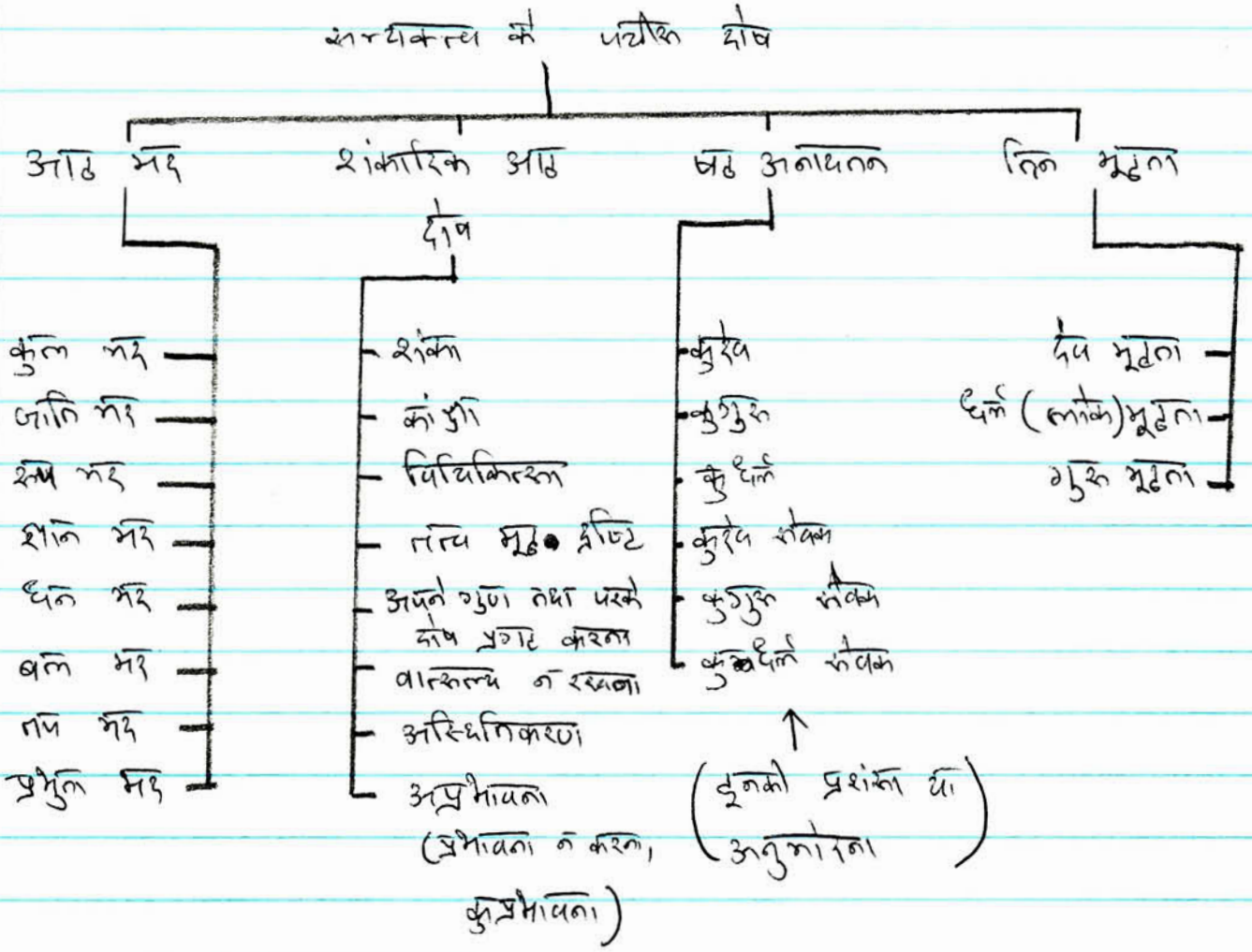

## (२) जीव व अजीव तत्त्व संबंधी भूल :-

चेतन को है उपयोग रूप, बिन मूरत चिन्मूरत अनूप।
पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इनतें न्यारी है जीव चाल,
ताको न जान विपरीत मान करी करे देह में निज पिछान।
मैं सुखी दुःखी मैं रंक राव, मेरे धन गोधन गृह प्रभाव,
मेरे सुत तिय मैं सबल दीन, बेरूप सुभग मूरख प्रवीन।
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान,

### जीव तत्त्व की भूल :-

जीव का स्वरूप चेतना लक्षण युक्त है, अर्थात ज्ञान-दर्शन तथा सुख रूप है। और जीव अमूर्तिक और अनुपम वस्तु है। जबकि पुद्गल मूर्तिक है और चेतना रहित है। धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश द्रव्य तथा काल द्रव्य अमूर्तिक होते हुए भी चेतना रहित है इसलिए जीवसे भिन्न है। इसलिए जीव का स्वरूप इन सभी द्रव्यों से भिन्न है। ऐसा न जान कर जीव देहमें अपना पन मानता है, पर संयोगोंमें अपना पन मानते हुए मैं सुखी, दुःखी, अमीर, गरीब तथा परमें ममत्व करते हुए मेरा घर, मेरा धन, मेरे गोधनादि, मेरा प्रभाव, मेरी स्त्री, मेरे पुत्र आदि मानता है। तदउपरांत मैं बलवान, मैं दीन, मैं सुंदर, मैं बदसूरत, मैं मूर्ख, मैं प्रवीण ऐसा मानता है। ऐसी शरीर तथा संयोग रूप अवस्थाको ~~अपनी~~ ~~अवस्था~~ में मानना जीव तत्त्व की भूल है।

### अजीव तत्त्व की भूल :-

शरीर उत्पन्न होते ही मैं उत्पन्न हुआ और शरीर नाश होते ही मेरा नाश हो गया, इस तरह शरीर की सर्व

TOPS FORM 7525

अवस्था को मेरी अवस्था मानना अजीव तत्त्व संबंधी भूल है।
(मैं चल रहा हूं - धर्म द्रव्य संबंधी भूल
मैं बैठा हूँ - अधर्म द्रव्य संबंधी भूल
मेरा आकाशमें इतना विस्तार - आकाश तत्त्व संबंधी भूल
मेरी आयु - काल द्रव्य संबंधी भूल )

प्र-४ सात तत्त्व संबंधी भूल :-

जो विचारी प्रयोजनभूत तत्त्व, स्वरूप तिनमांही विपर्ययत्व,
चेतनको है उपयोग रूप, बिनमूरत चिन्मूरत अनूप।
पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल,
ताको न जान विपरीत मान, करी करे देह में निज पिछान।
मैं सुखी दुःखी मैं रंक राव, मेरे धन गृह गोधन प्रभाव,
मेरे सुततिय मैं सबल दीन, बेरूप सुभग मूरख प्रवीन।
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान,
रागादि प्रगट ये दुःख देन, तिनही को सेवत गिनत चैन।
शुभ अशुभ बंध के फल मंझार, रती अरती करै निजपद विसार,
आतम हित हेतु विराग ज्ञान, ते लखें आपकु कष्ट दान।
रोके न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय,

जीव तत्त्व संबंधी भूल :-

शरीर को जीव मान लेना, रागादि तथा पर पदार्थों में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व मानना तथा जीव और पुद्गल की मिले हुए असमान जातीय द्रव्य पर्यायको अपना स्वरूप मानना जीव तत्त्व की भूल है। (विस्तृत वर्णन प्र-३(क) में लिखा है)।

<u>अजीव तत्व ~~की~~ संबंधी भूल :-</u>
शरीर की अवस्था को अपनी अवस्था मान लेना

<u>आस्रव तत्व ~~की~~ संबंधी भूल :-</u>
राग - द्वेष - मोह के परिणामों को सुख रूप मानना

<u>बंध तत्व ~~की~~ संबंधी भूल :-</u>
शुभ भाव को उपादेय तथा अशुभ ~~भा~~ भाव को हेय मानना

<u>संवर तत्व संबंधी भूल :-</u>
आत्मा के ज्ञान तथा वैराग्य को दु:ख रूप मानना

<u>निर्जरा तत्व संबंधी भूल</u>
आत्मा में लीन न होकर विषय कषाय की इच्छा करते रहना

<u>मोक्ष तत्व संबंधी भूल</u>
संपूर्ण निराकुल जीवकी दशा को सुखरूप न मानना

प्र-५ **मोक्षमार्ग दो नहीं मोक्षमार्ग का कथन दो प्रकार से है:-**

संसार के सभी जीव का एक ही प्रयोजन है - सुखी होना। सच्चा सुख जीव की संपूर्ण निराकुल अवस्था में ही है। इसी अवस्था को मोक्ष कहते हैं। इस अवस्था को प्राप्त करने रूप मार्ग को मोक्षमार्ग कहते हैं। इसका कथन दो प्रकार से है:-

मोक्षमार्ग

| निश्चय मोक्षमार्ग | व्यवहार मोक्षमार्ग |
|---|---|
| निश्चय सम्यकदर्शन | व्यवहार सम्यकदर्शन |
| निश्चय सम्यकज्ञान | व्यवहार सम्यकज्ञान |
| निश्चय सम्यकचारित्र | व्यवहार सम्यकचारित्र |

वास्तव में मोक्ष प्राप्त करने का जो सच्चा मार्ग है उसका निरूपण मतलब निश्चय मोक्षमार्ग। उस मोक्षमार्ग में चलते समय जैसा बाह्य आचरण तथा तत्त्व संबंधी यथार्थ मान्यता तथा देव-गुरु-शास्त्र की यथार्थ श्रद्धा जीव को देखने में आती है वह वास्तव में मोक्षमार्ग न होते हुए भी मोक्षमार्गी जीव को सदा सहचारी होने के कारण उपचार से मोक्षमार्ग कहने में आती है उसे व्यवहार मोक्ष मार्ग कहते हैं।

निश्चय से मोक्ष मार्ग की परिभाषा निम्न लिखित है:-

निश्चय सम्यग्दर्शन – पर द्रव्य से भिन्न अपने त्रिकाली आत्मा में ~~प्रतीत~~ रुचि तथा उसको ही मैं रूप श्रद्धा
पर द्रव्य से भिन्न आत्मा रुचि सम्यक्त्व भला है।

निश्चय सम्यग्ज्ञान – अपने ज्ञानानंद स्वभावी आत्मा का यथार्थ ज्ञान
आप रूप को जान पनो सो सम्यग्ज्ञान कला है।

निश्चय सम्यक् चारित्र – अपने त्रिकाली स्वभाव में ही लीनता
आप रूप में लीन रहे थिर सम्यक्चारित्र सोई

निश्चय मोक्षमार्ग ही सत्यार्थ मोक्षमार्ग है।

जब जीव ऊपर कहे अनुसार निश्चय मोक्षमार्ग में प्रवर्तता है, तभी उसको सात तत्त्व का निम्न लिखित अनुसार श्रद्धान होता है:–

जीव तत्त्व :– मैं पर द्रव्य तथा शरीरादि से भिन्न तथा रागादि विकारी भावों से भिन्न त्रिकाली शुद्ध जीव तत्त्व हूँ।
अजीव तत्त्व :– शरीर तथा पर पदार्थों में होने वाली अवस्था मेरी अवस्था नहीं है।
आस्रव तत्त्व :– मोह-राग-द्वेषादि परिणामों से भी मैं भिन्न हूँ। यह परिणाम त्यागने योग्य है।
बंध तत्त्व :– शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार के भाव त्यागने योग्य है। मैं तो शुद्ध तत्त्व हूँ।
संवर तत्त्व :– अपने शुद्ध स्वरूप में अपनापन मानना ही संवर की उत्पत्ति है।

TOPS FORM 7525

निर्जरा तत्व :- अपने शुद्ध स्वरूपमें लीनता पूर्वक इच्छा उत्पत्ति का निरोध निर्जरा है।

मोक्ष तत्व :- जीवको संपूर्ण शुद्ध और सर्वथा कर्मोंसे मुक्त स्वरूपको मोक्ष तत्व कहते हैं।

~~इन~~ इन्हे सात तत्व की प्रतीति के साथ निश्चय सम्यक्त्व धारी जीव को जिनेन्द्र कथित वितरागी धर्म, जिनेन्द्र भगवान और नग्न दिगंबर भावलिंगी गुरु की सच्ची श्रद्धा भी होती है। इसी को व्यवहार सम्यक्त्व कहते हैं।

इस प्रकार सच्चा मोक्षमार्ग तो एक ही है और वह निश्चय मोक्षमार्ग कहलाता है। व्यवहार मोक्षमार्ग उसी वस्तु को उपचार से दूसरी तरह कहने की रीत है।